dev vanee

[2022-23]

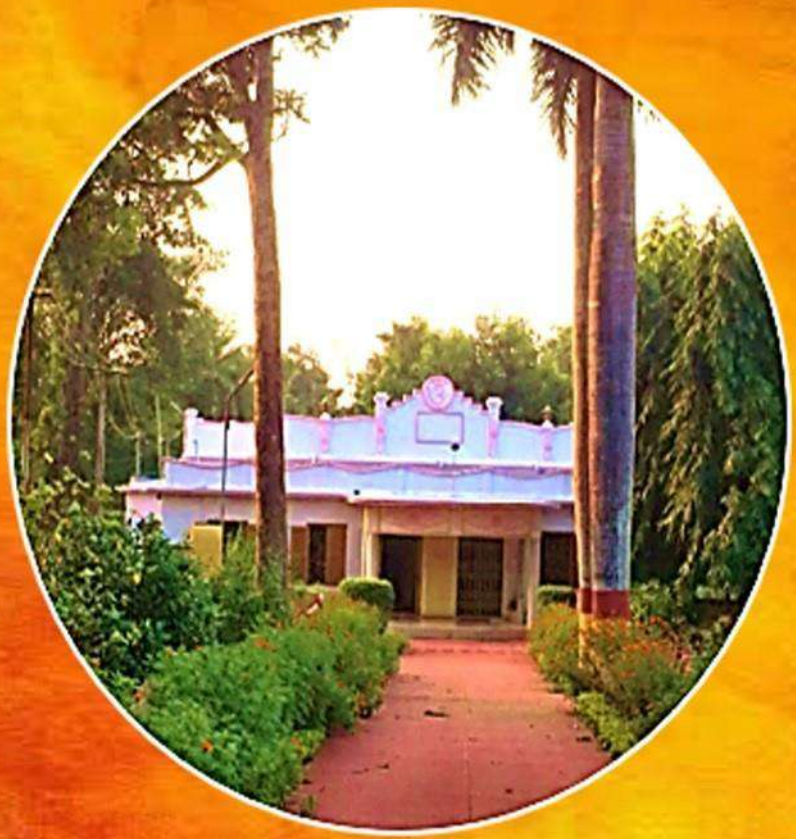

Dev Sangha Institute of Professional Studies and Educational Research

(NCTE Recognized * NAAC Accredited)

Dev Sangha, Bompas Town, Deoghar, Jharkhand- 814114

EDITORIAL BOARD

Prof. (Dr.) Rajnish Pandey
Principal, DIPSER

Dr. Babita Kumari
Vice – Principal, DIPSER

Dr. Kartik Pal
Assistant Professor, DIPSER

Smt. Shampa Roy
Assistant Professor, DIPSER

Our Guiding Light

"May the divine mother manifest in the heart of all student-teachers of the institute and Dev Sangha Institute of Professional Studies and Educational Research emerge as the centre of excellence".

- ***Pujya Srimat Saumendra Nath Brahmachary***

Message of the Principal

Prof. (Dr.) Rajnish Pandey
Principal, DIPSER

It gives me an immense pleasure to note that Dev Sangha Institute of Professional Studies and Educational Research, Deoghar, is bringing out the new edition of Annual Magazine DEV VANEE.

"Learning is a continuous process from the minute we are born, until we die". DIPSER provides a platform for every student to develop his learning and intellectual skills through the magazine DEV VANEE. As you scan through the pages, it will enlighten you with the important milestones achieved by our budding talents who have expressed their thoughts, ideas, hopes, feelings, aspirations and convictions in a creative way.

I congratulate the efforts of all the student teachers and the faculty who have worked hard to bring out this magazine to the desk of the readers.

Best Wishes

Prof. (Dr.) Rajnish Pandey

CONTENT

Sl.No	Title	Author	Page No.
1.	শরৎ মানে	অরুন্ধতী মুখার্জী	01
2.	मा सुरवन्दीता	वसुधा चंन्दार	02
3.	जननी	लाडली झा	03
4.	सबकी शिक्षा सबका विकास	स्वेता कुमारी	04
5.	राहला रिमिल	बीना मराण्डी	05
6.	काव्येषु नाटकं रम्यम्	लवली कुमारी	06-07
7.	मेघा रानी	सोनी प्रिया किस्कु	08
8.	बंद करो दहेज प्रथा	दिव्या कुमारी	09
9.	पापा	लवन्या टुडू	10
10.	शिक्षक दिवस	बबिता सोरेन	11
11.	मेरी प्यारी सहेली	रूबी कुमारी	12
12.	शिक्षक (कविता)	रीना कुमारी	13
13.	बेटी	स्वाति कुमारी	14
14.	काश! मेरी भी माँ होती	सीता बास्की	15
15.	झारखण्ड हमारा है	सीता बास्की	16
16.	बेटी पर कविता	सुषमा मुर्मू	17
17.	जीवन - चक्र	मोनिका श्रीवास्तव	18
18.	हमारा झारखण्ड आन्दोलन	सीता बास्की	19-20
19.	दोस्त	रीतु रानी	21
20.	बहुत दिनों के बाद	रानी कुमारी	22
21.	प्रकृति है अनमोल	गायत्री कुमारी	23
22.	शिक्षा	नीशा भारती	24
23.	बचपन	शालु कुमारी	25
24.	एक और आलौकिक शक्ति	नेहा झा	26
25.	मित्रता पर कविता	सुषमा मुर्मू	27
26.	जिन्दगी	रानी कुमारी	29
27.	जिन्दगी एक सफरनामा	सदाफ परवीन	30

28.	तू बस एक बार ठान ले	सुरभी कुमारी	32
29.	माँ	अन्नु कुमारी	33
30.	विश्वास	राखी कुमारी	34
31.	जिन्दगी के कुछ पल	जुली मुर्मू	36
32.	जिंदगी की दौर	लवली कुमारी	37
33.	विदाई	तान्या कुमारी	39
34.	मैं मजदूर हूँ	सविता हेम्ब्रम	40
35.	याद आती है	सेलीन बास्की	42
36.	रंगमंच का इतिहास	लवली कुमारी	43
37.	एक बेटी की अभिलाषा	प्रीति कुमारी	44
38.	गाँव	सिम्पी कुमारी	45
39.	विद्या का सफर	ईशिता	47
40.	माँ	जानू कुमारी	48
41.	वसंत की पुरवाई	प्रज्ञा कुमारी	49
42.	मेरी अनुभूति	खुशबू कुमारी	50
43.	गाँव की गलीयाँ	उपलीना बागे	51
44.	संस्कृति, हमारी धरोहर	नेहा रानी	52
45.	SELF – LOVE	Pinky Murmu	53
46.	A JOURNEY OF ENLIGHTENMENT	Christy Murmu	54
47.	A PSALM OF LIFE	Aishwarya Anup	56
48.	DOWRY	Usha Kiran Hembrom	57
49.	THE WANING EVENING	Shivani Kumari	58
50.	ARTICLE ON WOMEN RESERVATION BILL 2023	Barkha Kumari	59
51.	FEMALE EDUCATION	Vijeta Kumari	60
52.	BELIEVE IN YOURSELF	Pooja Kumari	62
53.	IMPACT OF SOCIAL MEDIA ON YOUTH	Manisha Kumari	63
54.	THE MAGIC WITHIN YOU	Angali Kumari Barnwal	64
55.	MOTIVATIONAL SHAYARI	Angali Kumari Barnwal	66
56.	PAIN	Neha Rani	67
57.	ART AND CULTURE	Swati Singh	68

58.	CREATION	Priyanka Mehta	69
59.	HOPE	Khushbu Kumari	70
60.	WOMEN OF INDIA	Nidhi Kiran	71
61.	BURDEN OF MARKS	Shruti Kumari	72

Basudha Changder, Roll No-80

শরৎ মানে

শরৎ মানে নীল আকাশে ভাসমান সাদা মেঘ

শরৎ মানেই শিউলি ফুলে ভর্তি গাছ আর ধুনুচির নাচ

শরৎ মানে মায়ের পথ চাওয়া

শরৎ মানেই কাশ ফুলের দেখা পাওয়া

শরৎ মানে হোক না যতো দূর্নীতির অবসান

আর করুক না সকলে ন্যায়ের রসপান

শরৎ ছোঁয়ায় জেগে উঠুক না

সকলের মনে নতুন সকল চেতনা।

Arundhuti Mukherjee
M.Ed. Semester-II
Roll no. 12

মা সুরবন্দীতা

"সূর্যের মতো উজ্জ্বল তুমি,

চন্দ্র সম শান্ত"।

"তৃণের মতো দীর্ঘায়ূ তুমি,

নদী সম অক্লান্ত "।

"তোমার বিদ্যায় এ জগৎ সৃষ্ট,

তোমাতেই তার শেষ "।

"তোমার জ্ঞানে জ্ঞানী হয়ে,

মাতাই সারা দেশ"।

Basudha Changder

B.Ed. 2023-2025

जननी

जन्म से ही त्याग की मूरत
फिर भी लुभावनी लागे उसकी सूरत
कोई शिकन ना उसके मुख पर
थक कर वो हर काम कर लेती हंसकर

Khushbu Kumari, Roll No-66

यूं ही नहीं उसे जननी कहते
यूं ही नहीं उसे अर्धांगिनी कहते
यूं ही ना उठाओ सवाल की तुम करती ही क्या हो
वो जो त्याग करती है तुम कर के तो बताओ

रूक जाये अगर वो एक दिन
तो रूक जाये तुम्हारे हर काम
सोचो जरा अगर वो हो ही न तुम्हारे जीवन में
तो तुम्हारे जीवन को कौन संवारेगा

हंसते हंसते वो विष भी पी सकती है
वो जननी हे साहब वो सब कुछ कर सकती है
ना उठाओ उसकी काबिलियत पर कभी सवाल दोस्तों
एक वो ही है सिर्फ तो तुम्हारी कामयाबियों की दुआएं मांगती फिरती है।

लाडली झा, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-06

सबकी शिक्षा सबका विकास

शिक्षा हमारे जीवन में, ज्ञान की दीप जलाती है।
मानवता का पाठ पढाकर, जीवन में सफल बनाती है।।

इंसानियत की सीख सिखाकर, मानव को सत्य बनाती है।
कठिनाईयों से भी राहों में, चलना हमें सिखाती है।।

प्रगति की सीढ़ी है शिक्षा, शिक्षा जीवन का आधार।
आविष्कार की जननी शिक्षा, करता हर सपना साकार।।

है शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, ज्ञान का उद्देश्य सर्वहित।
शिक्षा की पूंजी पास है तो, हर जंग जीत जाएंगे हम ।।

माँ सरस्वती का ये भंडार, जीवन का सहारा है।
सबकी शिक्षा सबका विकास, यही हमारा नारा है।।

स्वेता कुमारी, रोल नंबर-24, सेक्शन-बी,

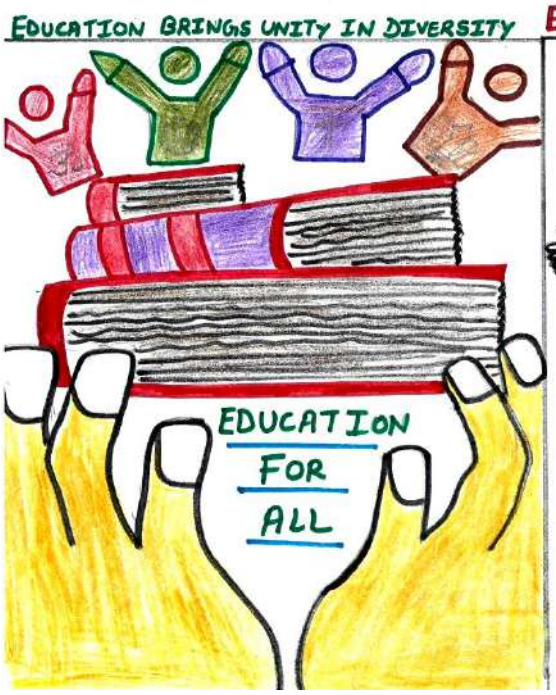

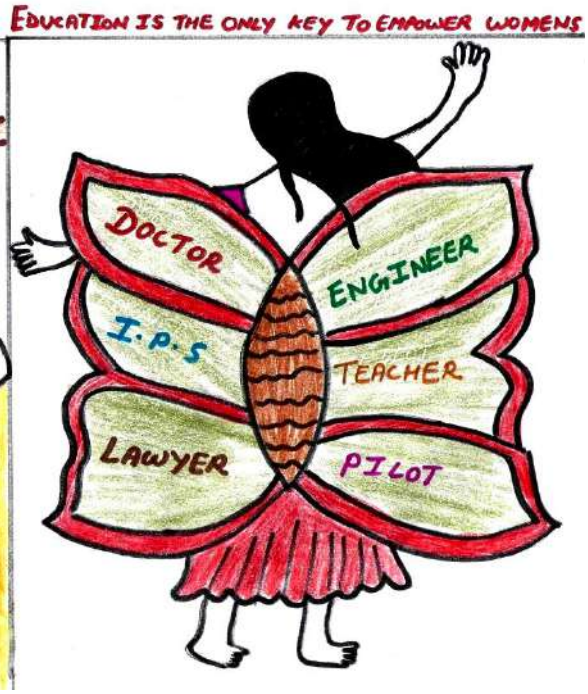

Purnima Mishra, Roll No-53

राहला रिमिल

राहला-रिमिल-ते लोसोत् एना होर
जांगा लाढ़ाव पिछी मेनाः तिना बोर।
ले जेत ताला सेनोः दो दिल गेबाड. हुयुग
चेतचो हुयुः सामाड रे काथा गे बाड. लायु

राहला-रिमिल रे दोः दो गोछा ताहेन
धाड़ीक जाड़ीक खानगे पारोम इदी येन
ञचका गे राकाप एना सेरमा ताला
गेल-गेलते पारोम सेनोः सारेड़ काते नाला

जाना जाला सेनो हो राहला-रिमिल लेका
लापेत-सिविल ञमो रेगे चांदोय रेरेय दाका
तिमिन दिनेम ताहेना कामी मेरे लोगोन
ओक्हो आलोम पुचुजा हिजुः मे लोगोन

होर ताला तड़ाम मे पांजा आलोम बाड़ीय
आमाग पांजा ञेलते होड़को ताड़ाम धाड़ीय
पांजा दो रे पांजायाम धांगा गाड यावताम
राहला-रिमिल दा-ते पालेन पांजाय बाड़ीयताम

Priya Tiwari, Roll No- 22

नाम-बीना मराण्डी, बी.एड., सेमेस्टर-I, रौल नं0-42, सेक्सन-ए

काव्येषु नाटकं रम्यम्

कालीदास के काव्य-सौदर्य, काव्य प्रतिमा, उनकी कल्पनाशक्ति तथा उनकी नाट्य कुशलता का परिचय उनकी रचनाओं के मार्मिक प्रसंगों से ज्ञात होता है। अभिज्ञान शाकुंतलम् कालिदास के सर्वश्रेष्ठ नाटक है इसमें सात अंक है। इनके काव्य सौंदर्य का चित्रण करते हुए कहा गया है:-

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।

तत्राडपि चतुर्थोडडकः तत्र श्लोक चतुष्टयं।।

अर्थात्-काव्यों मे नाटक रम्य है और उसमें भी रम्य शकुंतला उस पर भी चतुर्थ अंक और उसमे भी चतुर्थ श्लोक।

इस प्रकार हम चतुर्थ अंक के श्लोक को सीखेंगे तथा इसके श्रृंगार रस का आनन्द लेंगे।

चतुर्थ अंक के श्लोक:-

यात्येकतोडस्त शिखरं पतिरोषधीना

माविष्कृतो डरूण पुरः सरः एकतोडर्कः।

तेजो द्वयस्य युगपद व्यसनोदयाम्यां

लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।।

अन्वय:- एकतः ओषधीनां पतिः अस्त शिखरंयाति एकतः अरूणपुरः सरः अर्क आविष्कृतः। लोकः तेजो द्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाम्याम आत्मदषान्तरेषु नियम्यते इव।

अनुवाद:- एक ओर औषधियों का स्वामी चन्द्रमा अस्ताचल की ओर जा रहा है तथा दुसरी ओर अरूण (नाम के सारथि) को आगे किए हुए सूर्य उदित हो रहा है। इस प्रकार संसार दो तेज (चन्द्रमा और सूर्य) के एक साथ अस्त एवं उदित होने से मानो अपने दशा विशेषों (अवस्थाओं के परिवर्तन होने के विषय) में नियंत्रित (शिक्षित) किया जा रहा है कि इस परिवर्तनशील संसार में दुःख-सुख, उन्नति-अवनति की स्थिति को आते-जाते रहते हैं।

यास्यत्यध शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टभुत्कण्ठया

कण्ठः स्तम्मितवाण्य वृत्ति कलुष चिन्ताजडं दर्शनम्।।

वैकल्प्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः

पीडयन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः।।

अन्वय:- अद्य शकुन्तला यास्यति इति हृदयम् उत्कण्ठया संस्पृष्टम्, कण्ठः स्मम्तिवाण्पवृति - कलुषः दर्शनं चिन्ताजड़म। अरण्यौकसः मम तावत् स्नेहात इदशम् इदं वैकलव्यम्, गृहिणः नवैः तनयाविश्लेषदुः खैः कयं नु पीडयन्ते।

ब्याख्या:- प्रस्तुत पद्य में कवि कालिदास ने पुत्री की विदाई एवं उससे उत्पन्न होने वाली पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है, जो अद्यावधि प्रासंगिक है।

यहाँ ऋषि कण्व द्वारा पुत्री के वियोग से होने वाली विकलता का चित्र खींचा है। आज ही शकुन्तला जायेगी, पति गृह के लिए प्रस्थान करेंगी। इस विचार से ही ऋषि का हृदय व्याकुल हो रहा है। व्याकुलता भी ऐसी कि आशुओं की अविरल धारा बह चली है। अश्रु बहने से गला अवरूद्ध हो गया है, इसलिए बात निकलना भी बन्द सा हो गया है। आँखे चिन्ता के कारण जड़ सी हो गई है। ऋषि का मानना है कि वन में रहने वाले मुझ तपस्वी की जब ऐसी दशा हो रही है, जो कि सांसारिक मोहमाया से रहित है, तब उन गृहस्थ लोगों को पहली बार पुत्री को विदा करते समय कितनी पिड़ा होती होगी।

नाम-लवली कुमारी, बी.एड., सेमेस्टर -।, रौल नं0-53, सेक्शन-ए

मेघा रानी

घनी बादल आसमान में
उड़ नही है,
लेकर अपने साथ पानी।
खुशी से झुम उठे
जंगल के सारे मोर और मोरनी
देखकर आसमान से बरसते मेघा रानी।।

रिमझिम-रिमझिम बुंदे बरसाई
प्यारी मेघा रानी।
बागों में फूल खिल उठे,
खेतों में नन्हें पौधे,
देखकर आसमान से बरसते मेघा रानी।।

टीप-टीप बुंदे गिरने लगी,
हल्की-हल्की ठंडी हवा चलने लगी।
खलिहानों से हिरणें जंगल की ओर दौड़ने लगी,
देखकर आसमान से बरसते मेघा रानी।।

कंधा में हल लिए किसान अपने खेत को जाते,
धरती माँ के शरण में खुब अनाज उगाते।
रोज करे प्रार्थना भगवान से बरसाये पानी,
मुस्कुराते-गाते झुम उठे जब,
देखकर आसमान से बरसते मेघा रानी।।

नाम-सोनी प्रिया किस्कु, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं0-68, सेक्सन-बी

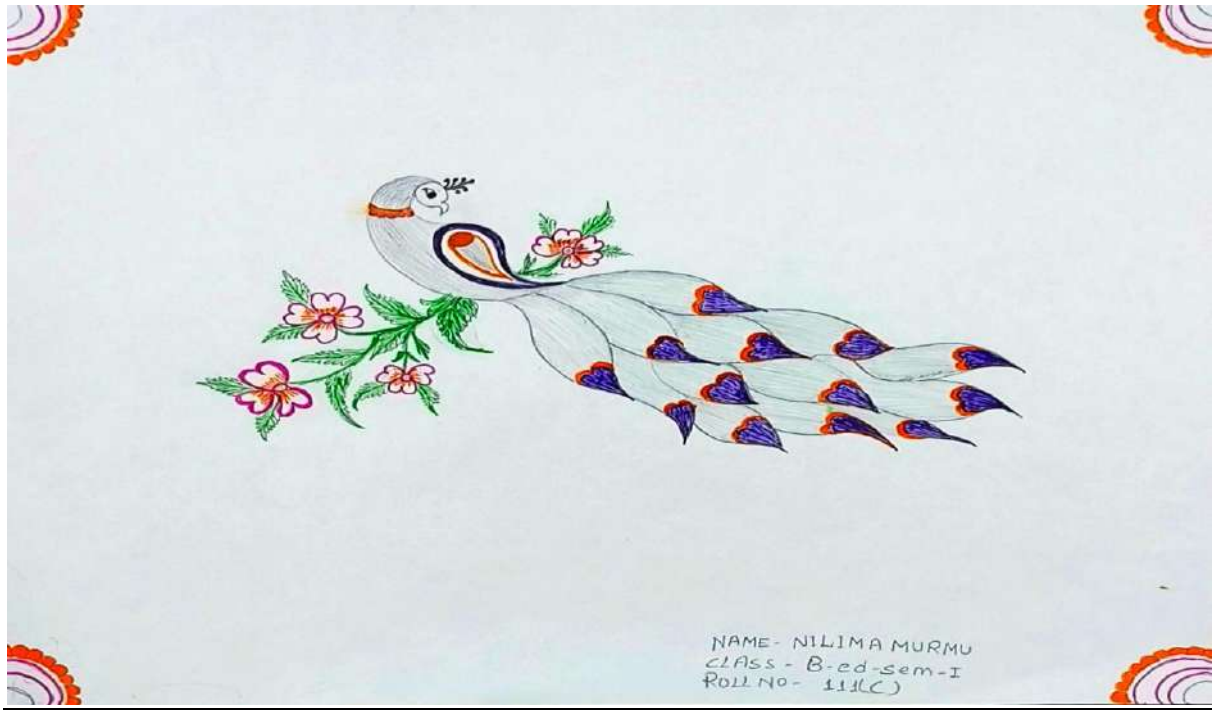

बंद करो दहेज प्रथा

बंद करो दहेज प्रथा
नारी का न करो व्यापार
स्वयं जिसे कहते तुम लक्ष्मी,
क्यों कर रहे फिर उस पर अत्याचार।

दौलत के तराजू पर तौल के,
छीना तुमने उसका अधिकार
नारी बिन जीवन है सुना
थोड़ा तो करो विचार।

कभी संगिनि, कभी तनयाबन
उसने लुटाया तुमपर प्यार
दौलत के नशे में डूबे ऐ! मानव
लूट लिया तुमने उसकी जाति का संसार।

अब भी समय शेष है देखो,
करो स्वयं में जागरूकता का संचार
कुरीतियों से ग्रसित समाज का,
तुम करो अब बहिष्कार।

त्यागो कुंठित सोच को अपनी ऐ! मानव
करो परिवर्तित अपना व्यवहार
हो सके जिससे समाज में
स्वस्थ मानसिकता का निर्माण।

बंद करो दहेज प्रथा
नारी का न करो व्यापार
स्वयं जिसे कहते तुम लक्ष्मी
क्यों कर रहे फिर उसपर तुम अत्याचार।

नाम-दिव्या कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं0-82

पापा

शाम हो गई घुमने चलो न पापा चलते-चलते मैं थक गई, कंधे पर बिठा लो न पापा,
अंधेरे से डर लगता मुझे सीने से लगा लो न पापा।
मम्मी तो सो गई
आप ही लोरियाँ सुना के सुलाओ न पापा
अब स्कूल खत्म हो गई
कॉलेज जाने दो न पापा।

पाल-पोष कर बड़ा किया
अब जुदा तो मत करो न पापा
अब डोली में बिठा ही दिया तो
आँसू तो मत बहाओ न पापा।

आप की मुस्कराहट अच्छी है
एक बार मुस्कराओ न पापा
आपने मेरी हर बात मानी
एक बात और मान लो न पापा।

इस धरती पर बोझ नहीं हूँ मैं
दुनियाँ को समझाओ न पापा।

Preeti Kumari, Roll No-14

नाम-लवन्या टुडू, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-18, सेक्शन-ए

शिक्षक दिवस

ज्ञान की ज्योत जगाते शिक्षक,
अच्छी बात सिखाते शिक्षक,
पढ़-लिखकर हम बने महान,
यही सिखाता इनका ज्ञान।

डाँट-प्यार कर हमें पढ़ाते,
लिखना सुंदर हमें सिखाते,
हर विषय का ज्ञान दे जाते,
असल जिंदगी का सार बताते,
सही इंसान है हमे बनाते।

नाम-बबिता सोरेन**,** बी.एड. सेमेस्टर-**I**, रौल नं°-77**,** सेक्शन-बी

मेरी प्यारी सहेली

बचपन था हमारा
मैने उसे हँसते हुए देखा है।
शिक्षा में थी उसकी रूचि
मैंने उसकी जिज्ञासा को देखा है।

खुश थी वो अपनी जिन्दगी में
दुसरों को उसकी जिन्दगी में नजर लगाने देखा है।
नाबालिक थी वो फिर भी
उसे शादी के बंधन में बंधते हुए देखा है।

रोने का वक्त था वो पर
जबरदस्ती उसे हँसते हुए देखा है।
दुसरों की खुशी के खातिर
उसे अपने सपनों को कुचलते देखा है।

किताबों का बोझ उठाने की उम्र थी उसकी पर
उसे रिश्तों का बोझ उठाते देखा है।
मैंने उसे अपनी किसमत पे घुट-घुट कर मरते हुए देखा है।

Neelam Prity Basky, Roll No-79

कौन कहता है मरे हुए का लाश कहते हैं
मैंने एक लड़की को जिन्दा लाश होते देखा है
मैंने अपने समाज की
एक लड़की के सपने को दफनाते देखा है।

नाम-रूबी कुमारी, बी.एड. रौल नं°-78, सेक्शन-बी

शिक्षक (कविता)

अंधेरे जीवन में हमारे
नये सवेरे लाते हैं ण्ण्
उन्नती की राह दिखलाते हैं
वो हमारे शिक्षक कहलाते हैं।

हर राह आसान बना देते
काबिल इंसान बना देते
उनकी उत्तम स्थान हैण्ण्ण्ण्
वो हमारे शिक्षक कहलाते हैं।

सही.गलत के पाठ पढ़ाते
आदर्श सच्चाई की राह दिखलाते
वो तो जीवन में चमत्कार लाते
वही हमारे शिक्षक कहलाते हैं।

राह आसान नहीं इसकी
धैर्य कर्म मेहनत जिसकी
हमारे जीवन में उजाला लाते
वो हमारे शिक्षक कहलाते हैं।

नाम-रीना कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-52, सेक्शन-बी

बेटी

जब जब जन्म लेती है बेटी
खुशियाँ साथ लाती है बेटी

ईश्वर की सौगात ही बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी

तारों की शीतल छाया है बेटी
आँगन की चिड़ियाँ है बेटी

त्याग और समर्पण सिखती है बेटी
नये-नये रिश्ते बनाती हैं बेटी

जिस घर जाये उजाला लाती है बेटी
बार-बार याद आती है बेटी

बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटी।

Premlata Murmu, Roll No-27

नाम-स्वाति कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-47, सेक्शन-ए

काश! मेरी भी माँ होती

यूँ पत्थर सा न ठोकरें खाता
सड़ी गलियों के कीचड़ को न भाता
काश! मेरी भी माँ होती।
कितना साकार, दिव्य दयामयी होती है माता
कितने कोमल हाथों से बनाता उसे बिधाता
कितने अभागे होते हैं वे लोग
जिन्हें लग जाता माता के विछोह का रोग
समुन्दर का जल भी पल भर में हो सकता रेगिस्तान
पर बच्चों के लाख अपराध पर भी माँ करती सम्मान
दिल रोकर टुट जाता है टुटे बर्त्तन की तरह
जब यादें आती है उनकी आठों पहर
सुख सपनों को पाली लाड़ से
उमड़ता शैलाब विछोह से
गमों दुःखों मुसीबतों की फरियादें
आता वक्त जब भी कभी गुस्साने की
आती याद माता की रोकर मनाने की।

Nilu Marandi, Roll No 17

नाम-सीता बास्की, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-56, सेक्शन-बी

झारखण्ड हमारा है

फूलों से सजा हुआ पहाड़ों से लदा हुआ

यह संसार न्यारा है

झारखण्ड हमारा है

सदियों से, वर्षों से कालक्रम के चक्रों से रौंद रहा,

रौंदता रहा-यह संसार प्यारा है

झारखण्ड हमारा है।

याद आती सन् संत्तावन और आती रोहिणी क्रांति के अग्रदुत आते,

कान्हू-सिद्धू तिलका मांझी इतने वर्षों बाद मिले,

यह बलिदान हमारा है।

झारखण्ड हमारा है।

न हो जाति, न हो रंग नहीं वर्ण-भेद यहाँ अतिथि है भगवान हमारा,

ये प्रेम-वसुन्धरा यहाँ मेरा देश फूले-फले, सबके साथों साथ चले

यह अभिमान गँवारा है

झारखण्ड हमारा है।

नाम-सीता बास्की, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-56, सेक्शन-बी

बेटी पर कविता

बेटी एक वरदान है
बेटी ही देश की शान है।।
ना समझो इसे तुम बोझ
यही देश का मान है।।
हर दुःख में साथ निभाएगी
पुत्र का भी कर्त्तव्य निभाएगी।।
बेटी एक वरदान है।
बेटी ही देश की शान है।।
घर में खुशियाँ वो बरसायेगी
हर दुःख को दूर भगायेगी।।
क्योंकि बेटी एक वरदान है
बेटी ही देश की शान है।।
ना समझो इसे तुम कमजोर
झांसी की रानी है।।
देवी का अवतार यही
यही देश का गौरव है।।
बेटी है तो यह दुनिया है
बेटी देवी स्वरूपा है।।
बेटी एक वरदान है
बेटी ही देश की शान है।।

नाम-सुषमा मुर्मू, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-97, सेक्शन-बी

जीवन – चक्र

बचपन शुरूआती जीत है, तू बढ आगे पीढी में कई रीत है।
अभी नकामयाबियाँ है, फिर आगे बडी जीत है।
प्रकृति के भी कई रंग है कभी सुखाड कभी हरित है,
कही कड़-कड़ाती धूप तो कहीं वर्फ-सी शीत है।

देखो जहाँ कल एक पौधा था अंकुरित,
वहीं आज वृक्षों से भरे वनों की संगीत है,
दिख रहा इसमें जो, वो वनचरों की प्रीत है।

बचपन था, बड़े हुए अब हम भी एक रूक्ष है,
जो चल/बढ चले लक्ष्य पे वो प्रख्यात हुए,
तो अब भी इसमें से कई सीमित है।

बढ रहे इस दौर में हम आप से/आप हमसे, हम
आपसे प्रेरित हैं, चल रहे इस चक्रशैली में,
कुछ अच्छाईयाँ, कुछ सच्चाईयाँ, सीख-समझ सब वर्णित है,
आप वंचित और हम इससे परिचित है।

ये तो खट्टी-मीट्ठी लम्हों से सम्मलित
जो ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित है।

ना दिशा सुनिश्चित,
ना उद्देश्य परिभाषित,
बस करो कार्य, रखो धैर्य,
ना छोड प्रयास, न रहे चिंतित
ये सब जीवन श्रृंखला में है स्थित
न रूक तू, न झूक तू ये
गाथा तुझ पर आधारित है,
ये गाथा तुझ पर आधारित है।

नाम - मोनिका श्रीवास्तव**,** बी.एड. सेमेस्टर-I**,** रौल नं°-33, सेक्शन-ए

<u>हमारा झारखण्ड आन्दोलन</u>

भारत की आजादी के करीब 19 साल पहले 1928 में झारखण्ड क्षेत्र मे छोटानागपुर उन्नत्ति समाज का गठन हुआ। जिसका उद्देश्य था जनजातीय समाज के उत्थान के लिए उन्हें आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक चेतना से लैस करना। इसकी सदस्यता केवल आदिवासियों तक सीमित थी। समाज ने आदिवासियों के लिए नौकरी, सरकारी सेवाओं में आरक्षण देने की माँग की। बिहार से अलग होकर बंगाल अथवा उड़ीसा के साथ छोटानागपुर एक उप राज्य का दर्जा दिए जाने की बात भी सर्वप्रथम छोटानागपुर उन्नत्ति से प्रस्तुत किया। लेकिन वास्तव में इस समाज का कोई प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं था। क्योंकि यह संगठन संभ्रांत आदिवासियो की संस्था थी। इनमें प्रमुख पाल दयाल, बंदी उराव, जुलियस लकड़ा थे। जब साइमन कमिशन 1928 में भारत आया तो आदिवासियों के प्रतिनिधि इस आयोग से मिले। इन्होंने आदिवासियों के लिए आयोग से एक पृथक प्रशासनिक ईकाई की माँग की। उन्नति समाज, कैथोलिक सभा और किसान सभा ने एक और मजबुत पार्टी का निर्माण किया जिसका नाम छोटानागपुर आदिवासी महासभा दिया। इसके अध्यक्ष बने इंगलैंड में पढ़े प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी जयपाल सिंह (मरांग गोमके)। उनके अधीन इस महासभा ने स्वाशन की नहीं बल्कि बिहार से अलग राज्य की माँग को भी अपने आंदोलन का लक्षय घोषित किया। जयपाल सिंह के नेतृत्व मंे आदिवासी महासभा ने राँची में एक डिग्री कॉलेज खोलने, आदिवासी मंत्री, संसदीय सचिव के रूप में नियुक्ति, प्रशासन में आदिवासियों की भागीदारी आदि की माँग की। 1950 में महासभा के जमशेदपुर अधिवेशन में फैसला लिया गया कि गैर आदिवासी भी इसकी सदस्यता ग्रहण कर सकते हैं। आदिवासी महासभा का नाम झारखण्ड पाटी रखा गया। 1950 के बाद यह पार्टी पूरी तरह राजनैतिक पार्टी के रूप मे कार्य करने लगी।

1952 के चुनाव में 33वाँ स्थान पर कब्जा कर झारखण्ड पार्टी बिहार विधानसभा में प्रमुख विरोधी पाटी के रूप में उभरी। 1953 में जब फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग स्थापित हुआ तो एक माँग पत्र सौंपा गया। जिसमें छोटानागपुर के संथाल परगना, बिहार में गया, शाहबाद और भागलपुर के कुछ अंश, उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के कुछ हिस्से, मध्य प्रदेश में रायगढ़ तथा सरगुजा और उड़िसा में भी सुन्दरगढ, क्योंझर और मयूरभंज को मिलाकर झारखण्ड प्रांत की माँग की गई। परन्तु झारखण्ड की माँग को अस्वीकार कर दी गई। पार्टी आयोग के समक्ष पृथक राज्य का औचित्य सिद्ध न कर सकी। झारखण्ड पार्टी की सबसे बड़ी हार के रूप में देखा गया।

1963 में झारखण्ड पार्टी का काँग्रेस पार्टी में विलय हो गया। काँगेस पार्टी में विलय मे जयपाल सिंह की पत्नी जंघआरा की बहुत बड़ी भुमिका मानी जाती है। झारखण्ड पार्टी का कॉग्रेस में विलय इस आंदोलन के लिए घातक साबित हुआ। विलय के खिलाफ झारखण्ड पार्टी से अलग हुए कुछ नेताओं ने 'अखिल भारतीय झारखण्ड पार्टी' और 'हुल के झारखण्ड पार्टी' के जरिए उस छोटानागपुर और संथाल परगना को संगठित करने का प्रयास किया। लेकिन वे पूर्व की भांति जनप्रियता तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में असफल रहे।

60 के दशक के अंतिम वर्षों में झारखण्ड के महानायक शिबू सोरेन (दिशोम गुरू) का उदय हुआ। आदिवासी संस्कृति और परम्परा में निहित सोच और संस्कार के बल पर उन्होंने झारखण्ड आंदोलन को सक्रिय किया। उन्होंने झारखण्ड क्षेत्र में महाजनी प्रथा के खिलाफ संघर्ष और शराबबंदी, सामूहिक खेती व आदिवासी समाज में आशा एवं उम्मीदों के नये सपने जगा दिये। उनका मुख्य उद्देश्य

नशाबंदी, साहुकार तथा जमीन बेदखली के खिलाफ जन-आन्दोलन खड़ा करना था। 1973 में शिबू सोरेन के नेतृत्व में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (श्रडड) का गठन किया गया। यह दल गैर आदिवासियों द्वारा यहाँ के आदिवासियों के शोषण का विरोध करता था। श्रडड अपने चार लक्ष्य तय किये। महाजनी प्रथा के खिलाफ संघर्ष, विस्थापितों का पुनर्वास और कारखानों में आदिवासियों की बहाली का संघार्ष, वन कानून के विरोध में जंगल कटाई का आंदोलन और अलग झारखण्ड राज्य के लिए आन्दोलन।

1978 में ही अलग राज्य आंदोलन ने कड़ा रूख अपना लिया, 1978 में शिबू सोरेन एवं ए. के. राय के नेतृत्व में पटना में अलग राज्य की माँग को लेकर विशाल जुलूस निकाला गया। इसी वर्ष आदिवासियों में राजनीतिक चेतना जगाने के नाम पर ''जंगल लगाओ अभियान'' भी चला, आंदोलनकारियों द्वारा जेल भरो आंदोलन, सरकारी भवनों पर तोड़-फोड़ आदि प्रारम्भ किये गये। राँची, चाईबासा, जलशेदपुर, पलामु जिले में बंद का आयोजन किया गया। 1980 में हुए विधान सभा चुनाव में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा ने शिबू सोरेन के नेतृत्व में भारी समर्थन प्राप्त किया। परन्तु 1984 तक आते-आते श्रडड का नेतृत्व बिखराव का शिकार हुआ, श्रडड के महत्वपूर्ण नेता चुनाव हार गये।

1986 में आजसू (ऑल झारखण्ड स्टूडेन्ट युनियन) का गठन भी जमशेदपुर में किया गया। इसके अध्यक्ष प्रभाकर तिर्की तथा महासचिव सूर्य सिंह बेसरा बने। आजसू के गठन से छात्रों एवं महिलाओं को झारखण्ड आंदोलन में भागीदारी के लिए बड़ा और व्यापक मंच मिला। आजसू द्वारा झारखण्ड बंद का आह्वान किया जो पूर्णतः सफल रहा। इसी साल डॉ0 दयाल मुंडा, डॉ0 बिन्देश्वरी प्रसाद केशरी की पहल पर झारखण्ड क्षेत्र के सभी सामाजिक संगठनों और बुद्धिजीवियों को एक मंच पर लाने के लिए झारखण्ड समन्वय समिति का गठन किया गया। 1987 में झारखण्ड के आंदोलनकारियों द्वारा स्वतंत्रता दिवस की बहिष्कार की घोषणा की गई। इसी साल झारखण्ड समन्वय समिति सम्मेलन रामगढ में हुआ। अलग झारखण्ड आंदोलन से संबंधित एक महत्वपूर्ण घटना 1989 में घटी जब झारखण्ड समन्वय समिति ने कलकत्ता में रैली आयोजित की, इस रैली में लगभग 80 हजार झारखण्डियों ने भाग लिया। झारखण्ड समन्वय समिति द्वारा संपूर्ण उस झारखण्ड क्षेत्र में आर्थिक नाकाबंदी की गई। आजसू का 72 घंटे का झारखण्ड बंद पुरी तरह सफल रहा। 1990 छोटानागपुर तथा संताल परगना के सभी विधायक व लोकसभा सदस्यों की एक बैठक हुई। जिसमें सभी दल के सदस्यों ने अलग झारखण्ड की माँग को दोहराया। 9 जून 1995 को बिहार सरकार ने झारखण्ड क्षेत्र स्वाशासी परिषद ;श्र।।ब्द्ध का गठन किया। जिसके अध्यक्ष शिबु सोरेन एवं उपाध्यक्ष सूरज मंडल बने, पर 1998 में बिहार सरकार ने जैक को भंग कर दिया।

फरवरी 2000 के विधानसभा चुनाव मे झारखण्ड मुक्ति मोर्चा मात्र 12 सीटों पर विजयी हुई, जबकि भाजपा की झारखण्ड क्षेत्र से 32 सीटें मिली। केन्द्र स्थित भाजपा सरकार ने झारखण्ड राज्य संबंधी विधेयक का नया प्रारूप तैयार कर राज्य सरकार को भेजा। बिहार सरकार ने अपनी राजनीतिक मजबूरी के चलते बिहार का विभाजन कर 18 जिलों का झारखण्ड राज्य बनाने के प्रस्ताव मंजूर कर लिया। 25 अप्रैल 2000 को बिहार विधानसभा ने विधेयक अनुमोदन कर दिया। 2 अगस्त को लोकसभा द्वारा बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक, 2000 पारित कर दिया गया, इस प्रकार 15 नवम्बर 2000 को झारखण्ड राज्य का जन्म हुआ।

नाम-सीता बास्की, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-56

दोस्त

एक दोस्त की दोस्ती ऐसा हुआ करे
जो सिर्फ मेरा हुआ करे।

अगर मैं रोऊँ तो वो हँसाया करे
अगर मैं रूठूँ तो वो मनाया करे।
बहला फुसला कर वे नित नए मसालों में
वो नाज मेरा उठाया करे।।

Rani Kumari, Roll No-11

अगर वो भूल जाए नाम मेरा तो
वे मुझे गलत नामो से बुलाया करे।
मेरी हर गम मे वह शामिल हो
मेरी हर शरारत में मुस्कुराया करे।।

मेरी अक्सर नादानियों पे वो
मुझे अधिकार से डराया करे।
एक दोस्त की दोस्त ऐसा हुआ करे
जो सिर्फ मेरा हुआ करे।

नाम-रीतु रानी**,** बी.एड. सेमेस्टर-**I,** रौल नं°-114, सेक्शन-सी

बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर देखी
पकी-सुनहली फसलों की मुस्कान
बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर सुन पाया
धान कूटनी किशोरियों की कोकिल-कंठी तान
बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर-से ताजे-टटके फूल
बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जी-भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे सजी-भी
बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अब की मैंने जी-भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर
बहुत दिनों के बाद

नाम-रानी कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-11

प्रकृति है अनमोल

पेंड़ दिए उपवन दिए
नदी तलाब झरने दिए
सागर दिए, समुद्र दिए
प्रकृति ने हमें कई रंग दिए

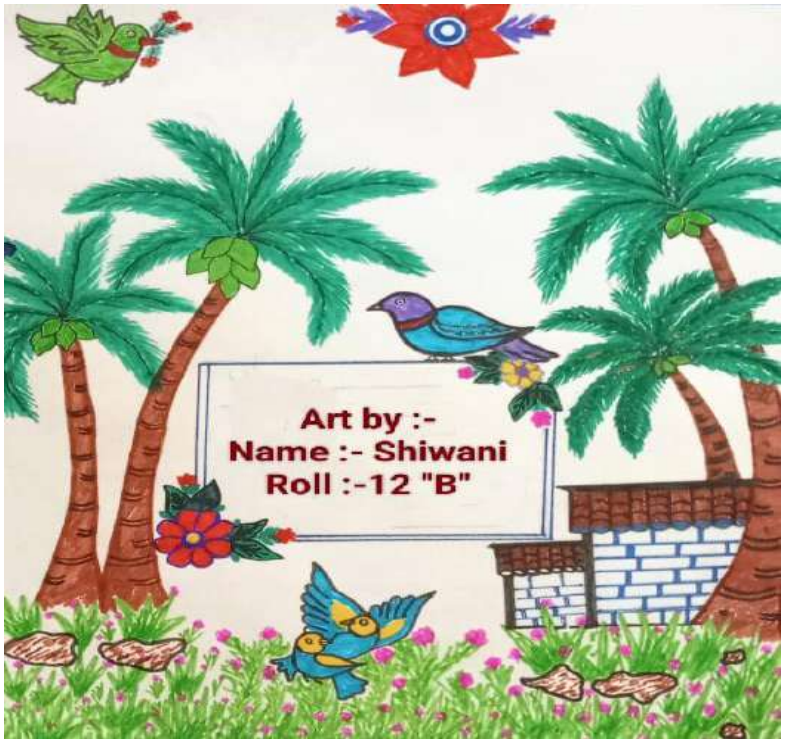

वन दिए कानन दिए
फल-फूल जीवन दिए
स्वच्छ वायु का उपहार दिया
मनुष्य को जीवन दान दिया

हिम ओढ़ा हिमगिरी दिया
कल-कल बहती नदियॉ दी
द्वीप दिए समतल दिए
रहने को हमें घर दिया।

अपनी शीतल छाया दी
मनुष्य को माया दी
हर सुख आनंद दिए
प्रकृति ने हमें कई रंग दिए।

नाम-गायत्री कुमारी,
बी.एड. सेमेस्टर-I,
रौल नं°-100, सेक्शन-बी

शिक्षा

शिक्षा वैसी दो जिससे हो सके चरित्र निर्माण,
शिक्षा वैसी दो जिससे हो सके चरित्र निर्माण
जब होगा चरित्र का निर्माण तभी बनेगा अपना देश महान।

शिक्षा अलख जगाती है मानवता का निर्माण कराती है।
मनसा, वाचा, कर्मणा मानव को राह दिखाती है।

शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास का माध्यम हो शिक्षा।
रोजी-रोटी के साथ-साथ जो कर्त्तव्य का ज्ञान दे ऐसी हो शिक्षा।
अहंकारी, उदंड, प्रपंची होने से जो रोके वैसी हो शिक्षा।
अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना यही तो है शिक्षा।

मानव का जो सम्पूर्ण विकास कराए,
सामाजिक व्यवहार खिलखिलाए ऐसी हो शिक्षा
केवल साक्षरता और जीवन-यापन का उद्देश्य न हो हमारी शिक्षा
जाति-धर्म संप्रदाय से जो ऊपर उठाये वो हो शिक्षा
मूल्यपरक ज्ञान प्रदानकर आदर्श-नागरिक निर्माण का ध्येय हो शिक्षा।।

नाम-नीशा भारती, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं°-61

बचपन

नानी की कहानी थी
और परियों का जमाना था
वो भी क्या दिन था
ना सुबह और ना ही शाम का ठिकाना था

घंटों तक खेलना था
और माँ से भी मार खाना था
वो भी क्या दिन था
माँ का प्यार सुहाना था।

स्कूल से थक कर आना था
फिर भी खेलने जाना था।
वो भी क्या दिन था
ना भुख प्यास का ठिकाना था।

एक बचपन की दुनिया थी
नाहि दुनिया वालो का ताना था,
वो भी क्या दिन था
माँ मुझे फिर से बचपन पाना था।

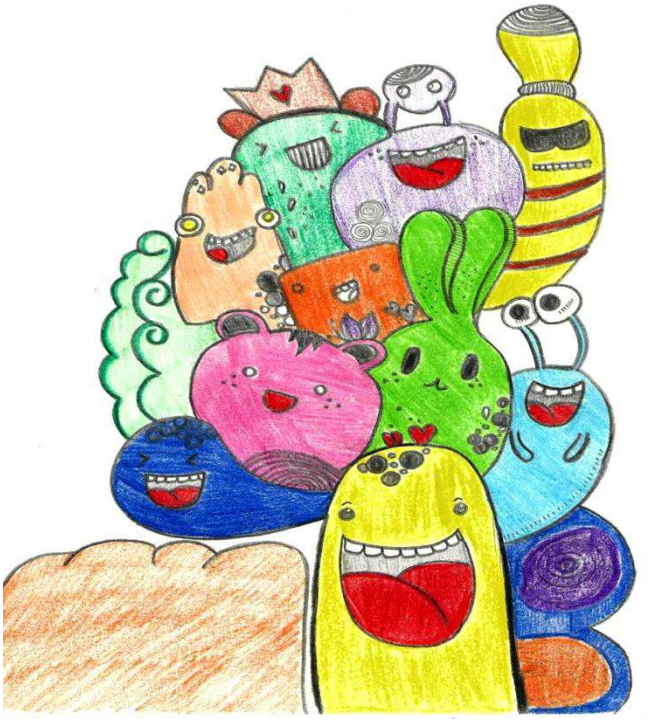

Aishwarya Anup, Roll No- 10

नाम-शालु कुमारी,
बी.एड सेमेस्टर-I,
क्रमांक-54, सेक्शन-बी

एक और आलौकिक शक्ति

स्त्री के अभ्यंतर आलौकिक शक्ति
युगों-युगों से विद्यमान है,
जो स्त्री को हमेशा अशक्त समझा
वो भुक्तभोगी है।

स्त्री के अभ्यंतर सौंदर्य से परिपूर्ण
एक निश्छल पावन मन है,
जो स्त्री को पावन मन से न समझा
वो चक्षुविहिन है।

स्त्री के अभ्यंतर प्रेम करने वाला
एक विशाल हृदय है,
जो स्त्री को विशाल हृदय से न समझा
वो हृदयहीन है।

नाम-नेहा झा, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-57, सेक्शन-बी

मित्रता पर कविता

मित्र हमारा सबेस प्यारा,

लगता हमे सबसे न्यारा।

मित्र हमारे साथ-साथ खाता पिता,

और साथ-साथ कुदता-फिरता।

मित्र हमारे साथ नाचता,

और साथ हमारे उछलता।

मुसीबत में वो साथ

मित्र हमारे प्यारे-प्यारे

मित्र हमारा सबसे प्यारा,

लगता हमें सबसे न्यारा।

नाम-सुषमा मुर्मू, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-98, सेक्शन-बी

Name- Mamta Marandi
Sec - 'C'
Roll - 171
B.Ed (2021-23)

<u>जिन्दगी</u>

छोटी सी है जिन्दगी
हर बात में खुश रहो।

जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज में खुश रहो।

कोई रूठा हो आपसे,
उसके अंदाज में खुश रहो।

जो लौट के नहीं आने वाले
उनकी याद में खुश रहो।

कल किसने देखा है
अपने आज में खुश रहो।

नाम-रानी कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-55, सेक्शन-बी

<u>जिन्दगी एक सफरनामा</u>

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,

अंदर मेरे ये कैसा शोर है।

हंसा मुझ पर फिर बोला,

चाहतें तेरी कुछ और थी,

पर तेरा रास्ता कुछ और है,

रूह को संभालना था तुझे,

पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,

खुला आसमान, चाँद, तारे चाहत है तेरी,

पर बन्द दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है,

सपने देखता है खुली फिजाओं के,

पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है।

नाम-सदाफ परवीन, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-12

Astha Pathak
B.ed Sem-1
Roll No- 95

तू बस एक बार ठान ले

तू ये जान ले,

तू ये मान ले,

तू एक बार बस ठान ले

तू जीत हासिल कर ले,

तू एक नया इतिहास गढ़ ले,

तू बस एक बार ठान ले

नाम-सुरभी कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-6

Reshmi KIsku, Roll No-30

माँ

ऊपर जिसका अंत नहीं,
उसे आसमाँ कहते हैं,
इस जहाँ में जिसका
अंत नहीं उसे हम माँ कहते हैं।

चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ।
सबसे मिठा बोल है माँ,
दुनिया में अनमोल है माँ।।

Sakshi Kumari, Roll no- 65

नाम-अन्नु कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-41, सेक्शन-ए

<u>विश्वास</u>

विश्वास शब्द में बहुत सारे अमूल्य चीजों का ज्ञात हो जाता है।

विश्वास इस बात से बढ़ता है कि आप अपने साथी के साथ हर स्थिति में कैसे व्यवहार करते हैं, जब आपकी जरूरते आपकी भागीदारों के साथ टकराती है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कितने बड़े या छोटे हैं आप अपने स्वयं के हित में या अपने महत्वपूर्ण दूसरे के हित में कार्य करेंगे।

नाम-राखी कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-40, सेक्शन-ए

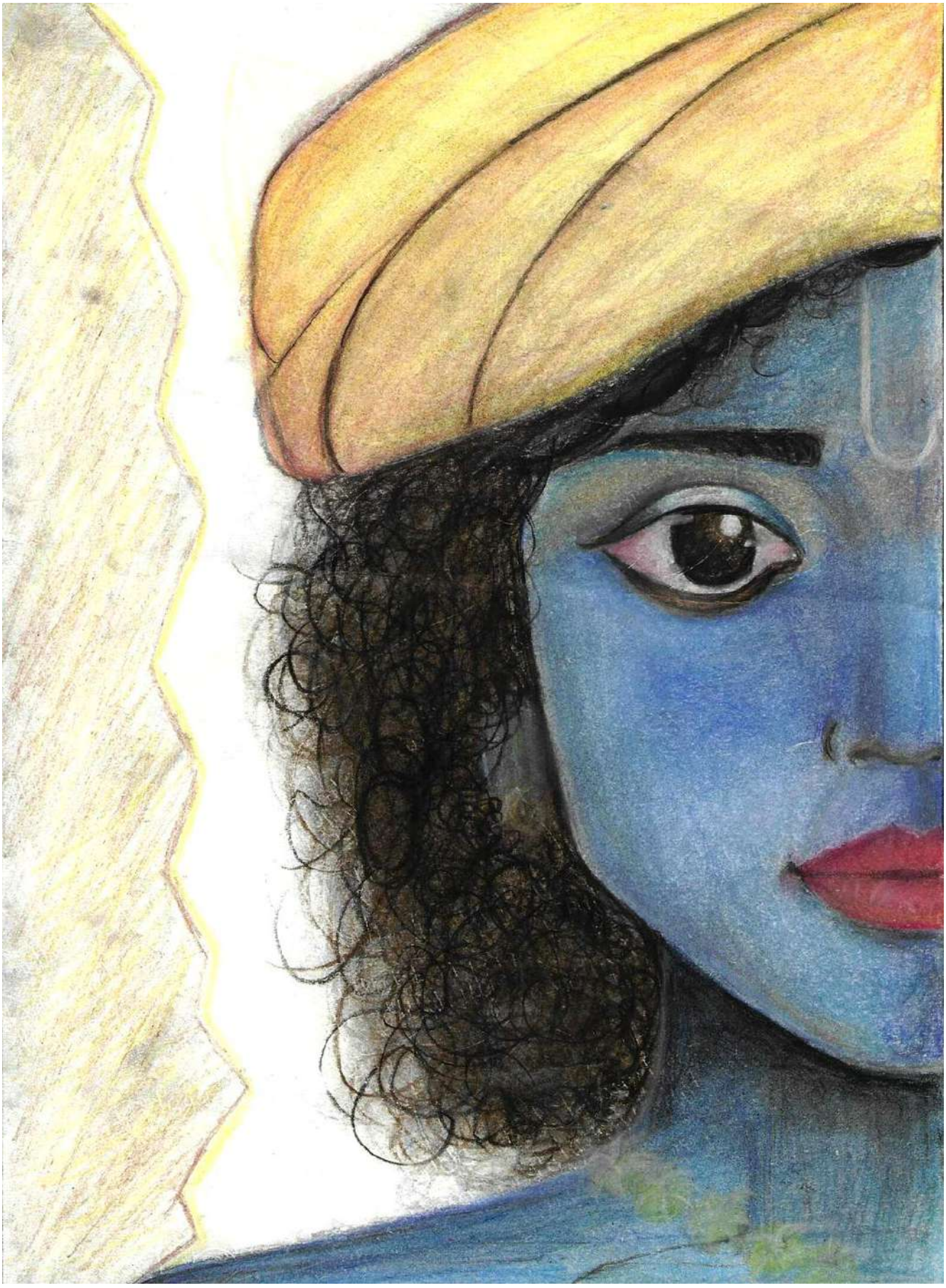

Bipra Bharti, Roll No- 23

जिन्दगी के कुछ पल

हाँ जिन्दगी के कुछ पहलू में

मैंने लोगों को बदलते देखा है।

एक दिखावे की जिन्दगी जीते देखा है।

सच्चाई से रूख मोड़ कर

कुछ झूठे पलों को अपनाते देखा है।

समय को न पहचानते हुए

एक आजाद जिन्दगी में बहाके मारते हुए देखा है।

लिख रही हूँ कुछ अल्फाज उन अपनों को

याद करके जिन्हें बेवजह जिंदगी जीते देखा है।

सोचती हूँ आखिर क्यों करते हैं लोग ऐसे

कुछ ही पल में हँसते हँसाते

आँखों में दुःख के आँसू भी देखा है।

उन गरीब के मुँह से दिल को चिरते हुए देखा है।

नाम-जुली मुर्मू, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-64, सेक्शन-बी

<u>जिंदगी की दौर</u>

जल से विलग मीन जैसी हो गई है जिदगी,
गीली लकड़ी सी सुलगती हो गई है जिदगी।

समस्याओं के थपेड़े खाती जीवन सरिता में,
एक जर्जर नाव जैसी हो गई है जिंदगी।

स्वार्थ से भरपुर राजनीति के बाजार में,
पानी से भी ज्यादा सस्ती हो गई है जिंदगी।

आतंक, भय से घिरे काले भयानक बादलों में,
बिजली की झलक जैसी हो गई है, जिंदगी।

चेतना बनकर जो भाई खोजने इंसान को,
पत्थरों के बुतो में ही खो गई जिन्दगी।

भावों की खुशबु नहीं है, न मधु है प्रेम का,
कागज के फूलों के जैसी हो गई है जिंदगी।

पशुता देखी तो लगा मखमली इंसानियत में,
टाट के पैबन्द जैसी हो गई जिंदगी।

नाम-लवली कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-39, सेक्शन-ए

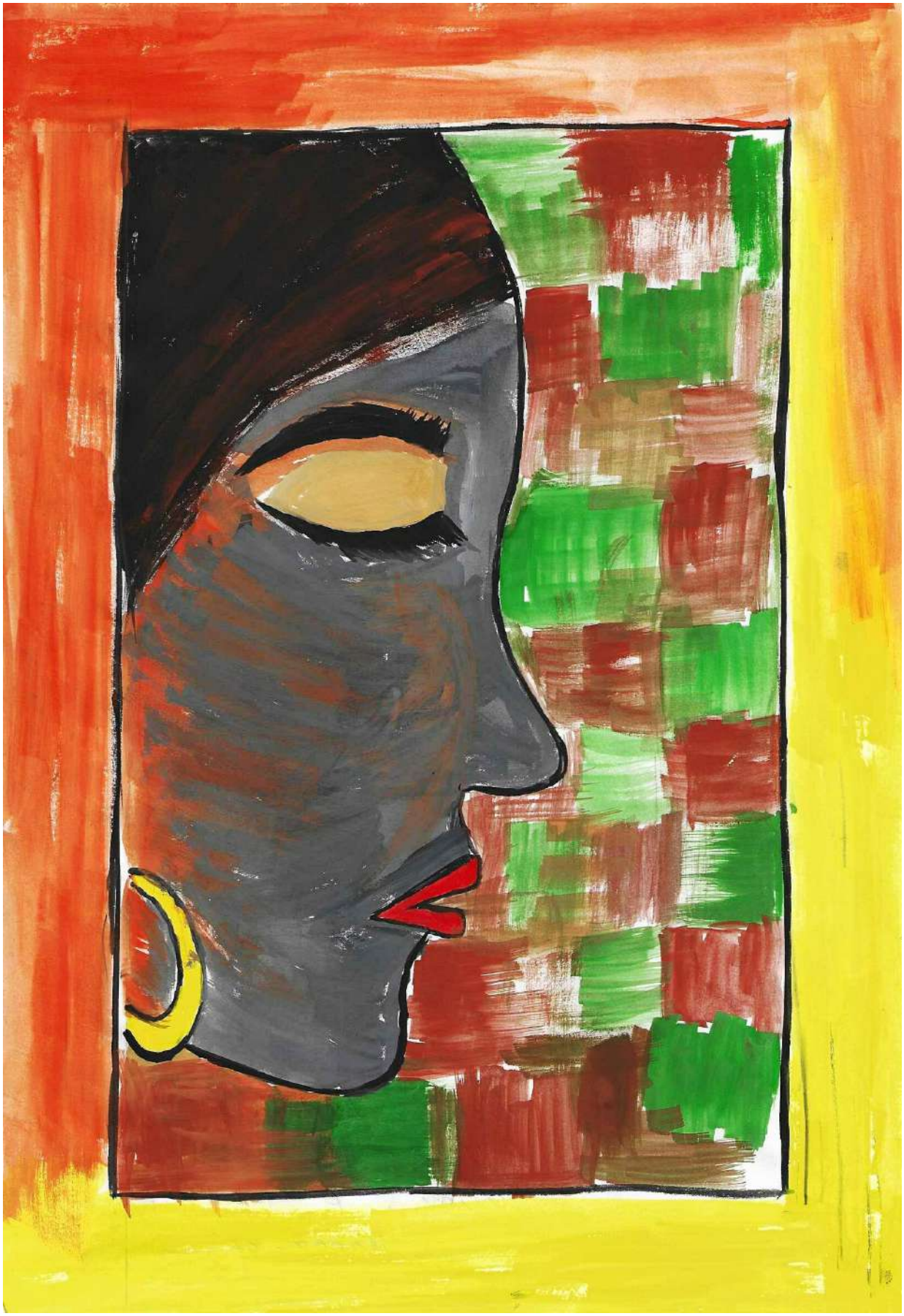

Aditi Raj, Roll No-15

विदाई

कन्यादान हुआ जब पूरा, आया समय विदाई का।
हँसी खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।

बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया।
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।

अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।
मेरे रोने का पल भर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने।।

क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं।
अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।

देखो अंतिम बार देहरी, लोग मुझे पुजवाते हैं।
आकर के पापा क्यों इनको, आप नहीं धमकाते हैं।

नहीं रोके चाचा, ताउ, भैया से भी आस नहीं।
ऐसी भी क्या निष्ठुरता है, कोई आता पास नहीं।

बेटी की बातों को सुन के, पिता नहीं रह सका खड़ा।
उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।

कातर बछिया सी वह बेटी, लिपट पिता से रोती थी।
जैसे यादों के अक्षर वह, अश्रु बिन्दु से धोती थी।।
माँ को लगा गोद से कोई, मानो सब कुछ छीन चला।
फूल सभी घर की फुलवारी से, कोई ज्यों बीन चला।।

बेटी के जाने पर घर ने, जाने क्या-क्या खोया है।
कभी ना रोने वाला बाप, फूट-फूट कर रोया है।।

नाम-तान्या कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-76, सेक्शन-बी

मैं मजदूर हूँ

सुबह से लेकर शाम तक
शाम से लेकर सुबह तक
करता रहूँ काम मैं मजबूर हूँ।

घर को छोड़ा दो रोटी की खातिर,
घर में बुढ़े माँ-बाप की आस हूँ,
मुझे नींद चैन कहाँ मैं मजबूर हूँ
क्योंकि मैं एक मजदूर हूँ।

घर में परिवार आस लगाए बैठी है,
बिटिया रानी दूर मुझसे वो रूठी है।
मुझे नींद चैन कहाँ मैं मजबूर हूँ
क्योंकि मैं एक मजदूर हूँ।

जब में निकला घर से बिटिया रानी सोयी थी
जब वह उठी मुझे ना पाकर वो आँख भर कर रोयी थी।
मुझे नींद चैन कहाँ मैं मजबूर हूँ,
क्योंकि मैं एक मजदूर हूँ।

नाम-सविता हेम्ब्रम, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-43, सेक्शन-ए

Renu Kumari, Roll No-63

<u>याद आती है</u>

शहर की चकाचौध में, सुकून की नींद कहा आती है।
टिमटिमाते दीये और गाँव की याद आती है।
पहचान भुला बैठे हैं शहर में
बना बैठे घर को ही जेल,

बिना तालों के दरवाजे
मिट्टी के घर की याद आती है।

किलकारियाँ बच्चों की सुनने, तरस गये हैं यह कान
गली में गिल्ली डंडा बरगद की लटकन याद आती है।

मॉल में खरीददारी रिवाज बना लिया शहरवालों ने,
मिलकर बनाते पापड़-बड़ियाँ घर के छत की याद आती है।

सुख-दुःख का संदेश, सिमट गये मोबाईल फोन में,
डाकिया लाता था जो उन चिट्ठियों की याद आती है।
सारे त्योहार मिल कर मनाते थे
क्या दिवाली और ईद, अतिथि देवो भवः जो ये समझते
उन ''अपनों' की याद आती है।
अकेले रहने के चक्कर में बिखर चुका है हर परिवार
छुट्टियों में मामा-मामी, नाना-नानी की याद आती है।

नाम-सेलीन बास्की, बी.एड. सेमेस्टर-I, क्रमांक-51, सेक्शन-बी

रंगमंच का इतिहास

किसी विशेष मुद्दे पर या किसी विशेष अवसर पर एक निर्धारित स्थान पर लोगों को संबोधित करने के लिए व्यवस्थित किए गए विशेष स्थल को मंच कहते हैं।

रंग मंच को थियेटर भी कहते हैं। रंग मंच वह स्थान है जहाँ नृत्य, नाटक खेल आदि होते हैं यह नाटक का नाटक को निमित करने के लिए होता है।

रंग मंच शब्द को शब्दों से मिलकर बना है रंग $ मंच, रंग का प्रयुक्त हुआ है देश को आकर्षक बनाने के लिए दिवारों, छत्तों और परदों इत्यादि पर विभिन्न प्रकार की चित्रकारी की जाती है। अभिनेता के वेशभूषा तथा श्रृंगार सज्जा में भी विभिन्न रंगों का उपयोग किया जाता है।

मंच इसलिए प्रयुक्त हुआ है दर्शकों के दल से कुछ ऊँचा रहता है। दर्शकों के बैठने के स्थान को प्रेक्षागाह कहते हैं तथा रंगमंच सहित सभी को प्रेक्षागृह या नाट्यशाला रंगशाला भी कहते हैं।

पश्चिमी देशों में इसे थियेटर या ओपेरा नाम दिया गया है ऐसा माना जाता है कि नाट्यकला का विकास सर्वप्रथम भारत में हुआ था। नाट्यशास्त्र के जनक भरत मुनि थे, इन्होने नाटक के प्रधान अंगों- संगीत, नृत्य संवाद एवं अभिनय के बीज किसी न किसी रूप में वेदों में विद्यमान है। भरत मुनिने अपने नाट्यशास्त्र में कहा भी है। ऋगवेद से मन्त्र या संवाद, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से नृत्य और अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर नाट्यवेद की रचना की।

यथा-जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्, सामेभ्योगीतमेव च।
यर्जुर्वेदाद्भिनयान् रसानाथर्वणादपि।।

महाभारत, रामायण के समय में नाटक खेले जाने का प्रमाण मिलता है। रंगमंच के कई रूप है लोकरंगमंच, रामलीला, पाखंड, आधुनिक रंगमंच।

दुनिया एक रंग मंच है और हम सब इस रंग मंच के कठपुलियाँ हैं।

अगर हम गहराई से देखें तो जिन्दगी में हम सब कोई न कोई किरदार निभा रहे हैं और हर-पल हमारे हाव-भाव बोलचाल का अंदाज और तमाम घटनाक्रम हमारी भुमिका नई कहानी गढती है।

भारतीय रंग मंच की परम्परा बेहद समृद्ध है और यह कही न कही हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को स्वांग के जरिये सामने लाती है।

फिल्मों और टेलीविजन के आने के बाद हमारे जीवन में हलचल मच गयी है और इसके अस्तित्व पर सवाल उठ रहे हैं। हर वर्ष 27 मार्च को विश्व रंग मंच दिवस मनाये जाते हैं।

नाटक के मंचन के लिए थियेटर या रंग मंच का ओलंपिक का भी आयोजन होता है। खेल ओलंपिक के तरह थियेटर ओलंपिक का शुरूआत भी ग्रीस से हुई। थियेटर ओलंपिक की स्थापना 1930 में ग्रीस के डेल्फी में हुई थी और इसके मेजबान दोस्त देश भी रहे हैं। जिन्होंने इसकी मेजबानी की है। 1930 में ग्रीस में, 1945 में ग्रीस में, 1999 में जापान में, 2001 में रूस में, 2006 में तुर्की में, 2010 में दक्षिण कोरिया, 2014 में चीन और 2018 में हमरा देश भारत था।

अतः हम कह सकते हैं कि रंग मंच की परम्परा काफी पुरानी तथा बेहद समृद्ध है और आज भी इसे धुम-धाम से दिखाया जाता है।

नाम-लवली कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-II, क्रमांक-53, सेक्शन-ए

एक बेटी की अभिलाषा

पहनकर रहूँ मैं भाव का आवरण,
भरा हो प्रेम से मेरा आचरण,
ईश्वर कृपा मुझपे कुछ ऐसी करो,
उज्जवल रहे भविष्य,सुनहरा हो जीवन,
सत्य निष्ठावान माता-पिता की बेटी,
संस्कारों की बनूँ मैं प्रतिमूर्त्ति,
शालीन, सौम्य, मृदुल गुणों की खान,
जमाना करे मेरे यशकी गुणगान,
बेटी, बहन पत्नी और माँ की,
निभा सकूँ मैं सफल किरदार,
दोनों कुलों की लाज की ओढनी,
ऐसे लपेटूँ की बन जाऊ शान,
ईश्वर की अदभुत रचना के निमित्त,
मेरी कोख से जनमे शिशु महान,
कभी इंदिरा कभी कल्पना तो,
कभी रीना डी, जैन बन,
भारत को दिलाऊँ प्रथम स्थान,
प्रेम, निष्ठा और विश्वास अपनाकर,
कायम करूँ एक अदभुत मिसाल,
गर्व है मुझे इस स्वरूप पर,
अपनी जीवन पर और प्रतिरूप पर।

नाम-प्रीति कुमारी,
बी.एड. सेमेस्टर-I,
रोल नं0-09

गाँव

आज मैंने बारिश को देखा,
और पूछा मैंने बारिश की बूँदों से,
काश मैं फिर से गाँव जा पाता।

आँख बंद किया तो,
मैंने गाँव में खुद को पाया,
खेलते पेंड़ की उस छाँव में,
बचपन मेरा महक रहा है,
गाँव हमारा चहक रहा है।

गाँव के रास्ते कुछ पक्के थे,
कुछ कच्चे थे कुछ नीचे थे,
आ चले उसी गाँव में,
उसी खेत में उसी खलिहान में।

Sunita Tudu

जहाँ इज्जत में सिर सूरज की तरह ढलते हैं,
चल उसी गाँव में फिर से चलते हैं।

बचपन मेरा महक रहा है,
गाँव हमारा चहक रहा है।

नाम-सिम्पी कुमारी,
बी.एड. सेमेस्टर-I,
रोल नं0-32, सेक्शन-ए

Komal Kumari, Roll No-07

<u>विद्या का सफर</u>

विद्या का सफर, सपनों का पर्व,
छोट सपनों से बड़ी उड़ान,
स्कूल के कक्षाओं से ऐसे ही,
खुद में मिठास घोलते हैं हम,
नए दोस्त, नए सपने,
हर पल मस्ती, हर क्षण आनन्द,
वो दिन यादगार और हसी रातें,
ज्ञान की राहों पर यूँ ही चलते हैं हम,
पढाई के धूप ओर मेहनत के वर्ष ,
सफलता के सीढ़ियों का चढना,
अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढना,
शिक्षा के माध्यम से
सपनों को यूँ ही गढते हैं हम,
मन में उम्मीदों का आकाश लिए,
सपनों को रंगीनी देती जिंदगी,
छात्र जीवन का यह सफर है खास,
सीखते हैं हम हर दिन कुछ नया,
ख्वाबों की सीमाएँ तोड़ते हैं हम,
मन में कल्पनाओं की उड़ान लिए,
चित्रित करते हें सपने के यात्रा की कहानी,
शब्दों की माला से जुड़ी है यह पाठशाला,
शिक्षा के मंजिल की ओर यूँ ही बढ़ते हैं हम।
शिक्षा के मंजिल की ओर यूँ ही बढ़ते हैं हम।।

नाम-ईशिता, बी.एड. सेमेस्टर-I,

माँ

तू ही बरकत, तू ही मन्नत, तू मेरी दुआ है।
तेरे बिना अधूरा लगता ये जहाँ है।

तू ही हसरत, तू ही जन्नत, तू मेरी खुदा है।
तेरे बिना अधूरा लगता ये जहाँ है।

तू ही हसी, तू ही खुशी, तू मेरी आसमाँ है।
तेरे बिना अधूरा लगता ये जहाँ है।

तू ही आरम्भ, तू ही अंत, तू मेरी माँ है।
तेरे बिना अधूरा लगता ये जहाँ है।

नाम-जानू कुमारी, बी.एड. सेमेस्टर-I, रौल नं0-04, सेक्शन-ए

वसंत की पुरवाई

ऋतु वसंत की आयी,
नव प्रसून फूले, तरूओं ने नव हरियाली पायी ,
पाकर फिर से रूप सलोना,
महक उठा वन का हर कोना,
करती जैसे जादू- टोना,
फिर नवल पुरवाई,
लज्जा के अवगुंठन सरके,
नयनों में नूतन रस भरके,
गले लगी लतिका तरुवर के,
भरती मृदु अंगड़ाई,
ऋतु वसंत की आयी,
नव प्रसून फूले, तरूओं ने नव हरियाली पायी ॥

नाम - प्रज्ञा कुमारी
कक्षा-M.Ed.
2nd semester (2022-2024)
क्रमांक- 13

मेरी अनुभूति

रोज की तरह आज भी गया पढ़ाने स्कूल में।
पर आज कुछ और ही था मेरे मानस मन में।।

देखा अपने छात्रों को एक नजर से उछलते -कूदता
कभी हँसते, कभी कूदते, कभी फूलों से मुस्कुराते ||

याद आ गया देख उन्हें, मुझे मेरा बचपन।
खूब खेलता था, अठखेलियाँ करता था
और ध्यान लगाकर पढ़ता था विद्यालय प्रांगण में।।

कितना सम्मान था अपने शिक्षकों के प्रति।
आज जाना, क्या होता है, गुरुवन्दन ।
न मन में पाप न हृदय में कोई दुर्भावना।
है कितनी इनमें चंचलता और चपलता।
बिगड़ गया है आज का बचपन।
बंध-सा गया है बाल-जीवन घर की चारदीवारी में।।

मैं और मेरी तन्हाई आज ये सोच रहे हैं।
आज मैं छोटा होता तो ये होता, वो होता,
उस बात पर हँसता, उस पर रोता, खूब शरारते करता, खेलता-कूदता ।
हालात-ए-बचपन आज है मेरे मानस-मन में ।।

छात्रों का जीवन हो गुलाब के फूलों की तरह।
खुशबू फैलाये ये सारे जग के आंगन में।।
सुधारना ही होगा बच्चों और छात्रों का जीवन
नहीं तो सारे संसार का बिगड़ जायेगा जीवन ।।
वैसे तो अनुभूतियों और भी हैं मेरे मन में।
मगर इतना ही काफी है-सुधारो बचपन,
सुधारो छात्र जीवन, सुधारो जीवन.....

KHUSHBU KUMARI
B.Ed. Roll No- 153, Sec C

गाँव की गलीयाँ

वो गलीयों जहाँ नन्हें कदमों ने लड़खड़ाते हुए पाँव रखा।
अजीब सी मुस्कान चेहरे में लोगों को घूरता रहा ।
वो गाँव की गलीयाँ जो हमेशा यादों में आता रहा।

दिन निकलता दिन ढलता रात होने तक खेलता रहा ।
माटी की खुशबु बदन में सर से पाँव लपटा रहा ।
यो गाँव की गलीयाँ जो हमेशा यादों में आता रहा ।

वो बाल्यावस्था अब धीरे-धीरे बढ़ता रहा ।
लगे बनने दोस्त-यार फिर जमकर मस्ती करता रहा ।
वो गाँव की गलीयाँ जो हमेशा यादों में आता रहा ।

कभी गलीयों में लुका छिपी तो गुल्ली डंडा खेलता रहा ।
दोस्तों के साथ शरारती में नं० वन बनता रहा ।
वो गाँव की गलीयाँ जो हमेशा यादों में आता रहा ।

नाम- उपलीना बागे क्रमाक - 01

बी० एड० सेमेस्टर - 01

हमारी संस्कृति, हमारी धरोहर

क्या होगा हमारी संस्कृति का ।
क्या होगा हमारे बच्चों का ।।
हमारे बच्चे संस्कृत, तेलुगु और मलयालम ।
को छोड़कर पढ़ते है, अंग्रेजी, फ्रेंच और चायनीज ।।

क्या होगा हमारी संस्कृति का ।
क्या होगा हमारे बच्चों का ।।
हमारे बच्चे दाल-रोटी और आलू-पोस्ता
को छोड़कर खाते है, पिज्जा, बर्गर और चौमीन ।।

क्या होगा हमारी संस्कृति का ।
क्या होगा हमारे बच्चों का ।।
हमारे बच्चे धोती-कुरता और रेशम की साड़ी
को छोड़कर पहनते है, जीन्स, शर्ट और हॉट पेंट।।

क्या होगा हमारी संस्कृति का ।
क्या होगा हमारे बच्चों का ।।
हमारे बच्चे सा रे गा मा पा
को छोड़कर गाते है मॉडर्न सॉन्ग।।

क्या होगा हमारी संस्कृति का ।
क्या होगा हमारे बच्चों का ।।
हमारे बच्चे तबला, वीणा और बांसुरी
को छोड़कर बजाते है, डीजे और सीटी ।।

क्या होगा हमारी संस्कृति का ।
क्या होगा हमारे बच्चों का ।।
हमारे बच्चे भरतनाट्यम और कत्थकली को छोड़कर करते है, हीप-हॉप और और कत्थकली
को छोड़कर करते है, हीप-हॉप और सालसा ।।

Neha Rani
B.Ed. Roll No.- 20,
Section-B

SELF - LOVE

Self - Love is accepting ourselves.
for, being who we are,
without Judging ourselves with others.
First, we should know ownself completely.

Self - Love is the First priority in life,
we should value ourselves,
And awke ownself better, Because
Self - Love is the Beauty of Soul.

Self - Love is the hidden treas were in ourself.
Through which we can make ourself
A better Version of ownself.
Being Realis more valuable
Than Being perfact.
So, We have to fly for ourself first.
F LY
First Love Yourself !

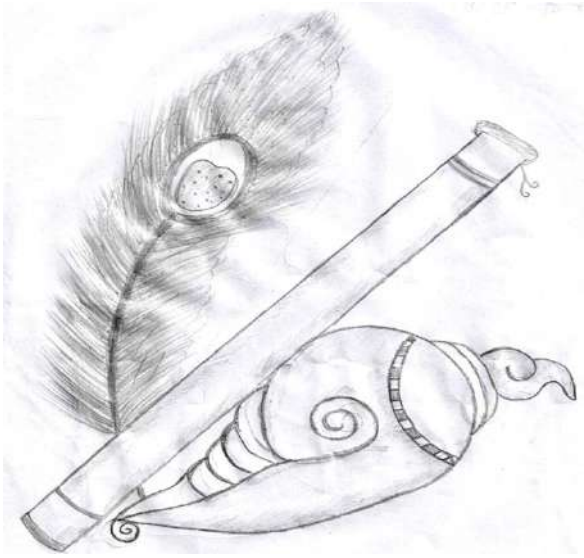

Lovely Kumari, Roll no- 39

Pinky Murmu, Roll No. - 87, B.Ed.

A JOURNEY OF ENLIGHTENMENT

The moment we step in
To the temple of education
Walls embraces our mind and soul
With mottled rays of wisdom

Where we find our guardian angels
In the face of educators,
They enlighten us with sincerity
And illuminate our path with brightness

In this sacred place of learning,
We seek knowledge's sweet embrace,
Guided by those who inspire,
In this lifelong, wondrous chase.

With every lesson learned, we grow,
Our minds and hearts expanding wide,
Through struggles and successes,
We'll conquer, side by side.

For in the temple of education,
Our spirits forever soar,
With gratitude and determination,
We'll keep learning, for ever more.

Name - Christy Murmu, Class - B.Ed., Roll No. - 47, Sec. - A

Sakshi Raj, Roll No-05

A PSALM OF LIFE

Life is a play,
What we have now,
Is the result of the past.
What we do now?
will be given to us in future.

Nothing is ours in this world.
What was other's in the past,
Is ours now,
And will be some other’s in future.
change is the philosophy of life.

Always be pure and sincere,
so that others will follow you.
But don't follow others blindly.
Don't trust everyone, but God?

Life is mysterious,
Consisting of tunnels,
And also highway,
If you want to solve it without accidents,
stand upon the righteous ways

Name - Aishwarya Anup, Class - B.Ed., Semester-I, Roll No. - 10, Sec. - A

DOWRY

Look what's happening there
A body covered in white clothes
Look what's happening there
Someone is wailing

Look what's happening there
Lifeless body of a newly - wed girl
What has happened to her?
Someone says 'Suicide'
Someone says 'Dowry'

It's a muder' not sucide
She was killed for money
Parents you're the culprits
you sold her for a lifetime

Think about each and every girl child
Give priority to their ambitions
Make her a strong and
Courageous women

Name - Usha Kiran Hembrom, Class - B.Ed., Semester-I, Roll No. - 25

THE WANING EVENING

The waning evening brings such a sight,
After whole day's darkness, it wraps our heart with light.
The chirping birds return to their nest
It seems like the universe proceeds towards rest.

The emotions written are some what, incomplete,
but those feelings in the silence of my heart are complete.
People say that waning evening brings darkness,
but it brings light of peacefulness.

The waning evening brings such a sight,
After whole day's darkness, it wraps our heart with light.

Raina Kumari, Roll No-03

Name - Shivani Kumari,
Roll No - 08, B.Ed., Sec. - A

'WOMEN RESERVATION BILL 2023'

Title : Together we empower, together we drive

This is a pride moment for us, "Narendra Modi" said in his speach as he introduced the Nari Shakti Vandan Adhiniyam is women Reservation Bill. Now, it will be offifially kown as the constitution (106th Amendment) Act.

The Act provides 33 Percent reservation to Women in the Lok Sabha and State legislative Assemblies, becoming the first bill to be passed in the new parliament building. The seats already reserved for scheduled castes and Scheduled tribes will also come with in the preview of women's reservation. The 128th constitutional Amendment Bill was recently passed in both the Lok Sabha and the Rajya Sabha.

Pending for nearly 27 years the women reservation bill was tabled in the very first session of Lok Sabha on 19th September.

Background : The discussion upon reservation bill is prevalent since the tenure of Famous Prime Minister Sri Atal Bihari Vajpayee in 1996. But government lacked a majority, the Bill couldn't approved. Earlier Attempts at Reserving seats:

*1996 : First woman Reserving seats for women was introduced in the Parliament.
* 1998-2003 : Government tables the bill a..... protests
* 2010 : The union cabinet passes the bill and Rajya Sabha
* 2014 : The Bill was expected to be tabled in Lok Sabha.

Need : There are 82 women Member of Parliament in Lok Sabha (15.2%) and 31 women in Rajya Sabha (13%) According to recent UN women data, Rwanda (61%), Cuba (53%), Nicaragua (52%) are the top countries in women representation.

*Empowerment of Women : Women's reservation in Politics empowers women in various levels. Encourges mainly women to participate in politics but also especially women to take on Leadership roles.

*Controversies : The bill even if passed will not take effect after the first delimination of constituencies which is likely to take place in 2027 so bill will not come into effect during the upcoming 2024 Lok Sabha election.

* The women's reservation bill reserves 33 percent of seats for women in the Lok Sabha and State assemblies does not include a quota for OBCs Women.

Name - Barkha Kumari, Roll No - 05, B.Ed. Semester-I

FEMALE EDUCATION

A human society consist of men and women. If both man and women are educated they can play the equal role. It is said that a man and a women are two wheels of a family cart, if one of the wheel is weak, they cannot move freely and properly. Normally 50% of total population is occupied with females. If female members of society are uneducated, fifty percent of the people of a country will be uneducated. The progress of the nation depends on female education too.

Female education plays the main role in soft conjugal to faster confugal life. Educated women can help their family, society and country as well. If they are educated they can look after their children properly. They can teach their children good manners. Discipline and moral values etc. As we know mother is the first teacher of every child similarly one educated women can help her husband to make their life prosperous and can manage her family appropriately.

Women should properly trained so, they need to learn various kinds of skills and knowledge. They can learn simple subjects like home science, child care 1st aid interior designing etc. Truly saying they can be best in their fields. Appropriate female education enhances freedom, justice and equality in opportunity.

Name - Vijeta Kumari, Roll No - 26, B.Ed. Semester-I

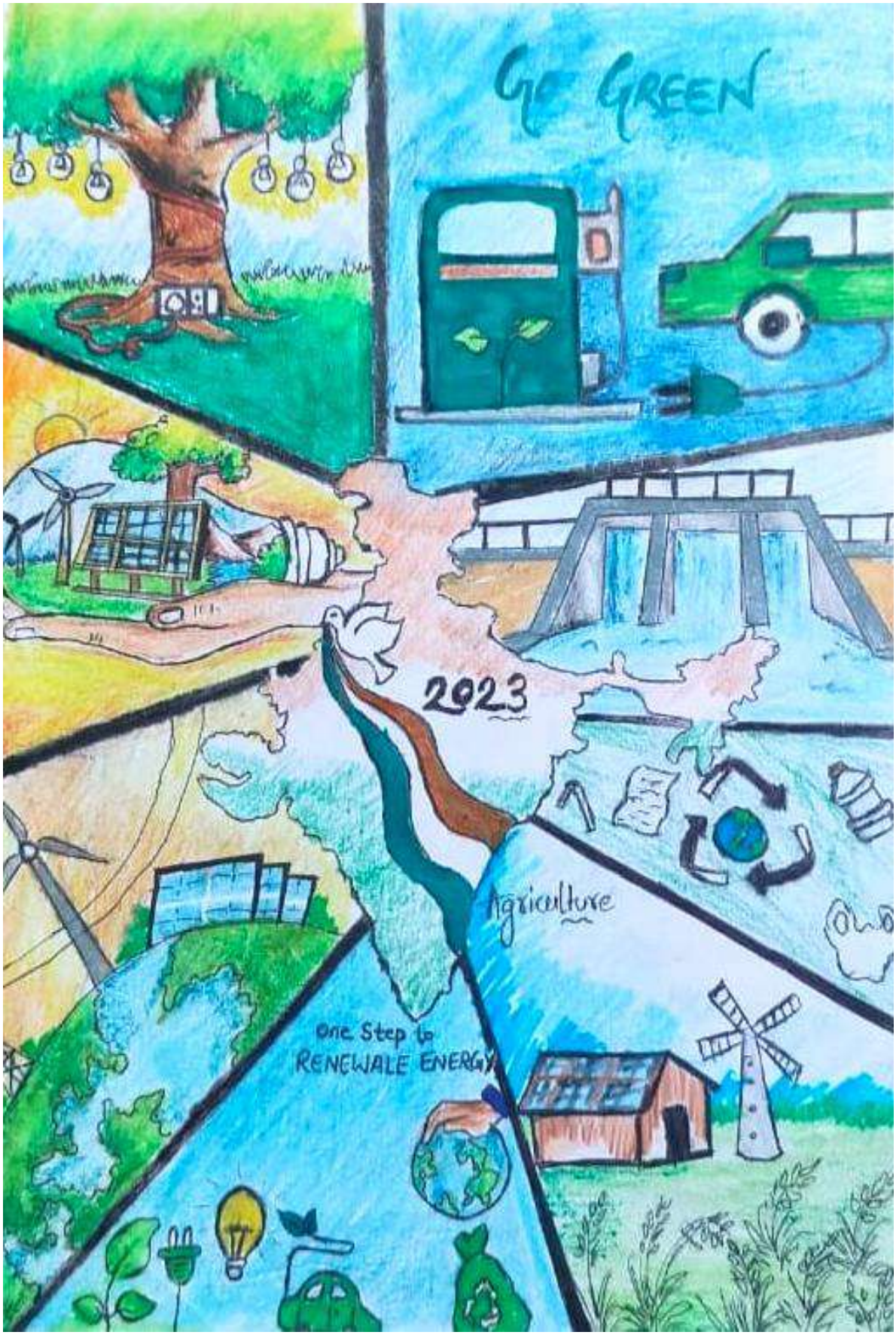

Neha Kumari

Believe in Yourself

Believe in yourself -

in the power you have

to control your own life, day by day.

Believe in the stength,

that you have deep inside

and your faith will help

Show you the way

Believe in tomorrow and what it will bring

let a hopeful heart carry you through

For things will work out

if you, trust and believe

There's no limit

to what you can do!

Name - Pooja Kumari, Roll No - 36, B.Ed. Semester-I, Sec. - A

"Impact of Social Media on Youth"

There is hardly any person who is not familiar with Social Media especially youth.

Social Media refers to the means of interacting among people in which they create, share or exchange information and ideas in virtual communities and networks. It creates a virtual world.

Social Media has both positive and negative impact on youth.

Positive Impact :-

* Best way to use Social Media for youth to study.

* Today's youth relies on social media for current affairs and news. Breaking news spreads faster online.

* It helps to boost creative skills.

Negative Impact :-

* Cyber Crime is the biggest problem in Social Media.

* Privacy integrity is violated.

* Social media spreads news with distortion.

Conclusion :-

In nut shell, social media is significant part of our lives today. Social media is a possible amplifier of both risks and paybacks, so youth must actively and profitably involve themselves in this online world or ecosystem.

Name - Manisha Kumari, Roll No - 49, B.Ed. Semester-I, Sec. - A

The Magic within you!

You have the Magic to create something new. You have the Magic that empowers you to change yourself the way you went to you have the magic to heal yourself,

The magic within you gives you the strength to make things better

Makes you understand that yes, You Matter.

Understand your worth, the purpose of your birth, understand why you are here on this earth.

You have the power to make surroundings better.

Be happy with yourself. Learn to accept all goods and bads, the magic within you would help you in this as you have the magic that empowers you.

Just understand whatever happens is good for you.

Name - Angali Kumari Barnwal, Roll No - 73, B.Ed. Semester-I

Susan Tigga, Roll No-48

Motivational Shayari

If you want to walk throughout life,

then maintain enthusiasm.

On the path, keep the desire to move forword in your heart. Whatever you get every morning, consider it can opportunity, forget defect, keep moving towards victory.

New courage is born with every effort keep the emotion alive in your heart keep moving forward, be strong, remain bright in the light of life.

A big ocean is formed from small rivers. Keep eliminating all obstacles through struggle. Never give up your desire to achieve your goal, keep your ambition alive in your heart.

No matter what difficulties you face in life, keep your inner enthusiasm alive. Fill every broken dream with new colors, stay focused on the goal through struggle. As long as courage is in control no path is difficult. Keep moving forwards your destination continuously,

and maintain your flight yourself.

Name - Angali Kumari Barnwal, Roll No - 24, B.Ed. Semester-I, Sec. – A

PAIN

Pain, you come like silent thief

Stealing my peace and causing grief

You rap yourself around my heart

A constant ache that won't disappear

I try to hide, try to hide

But you persist, you won't subside

You taunt me with your stubborn might

A burden that I bear day and night

So, pain I will dance with you once more

I will stand tall, and explore the beauty that life still holds is store

And one day I will see you no more

Name - Neha Rani
Class - B.Ed. (Semister-II)
Section-B
Roll No 06

Art and culture

Going my own way ,
With my imagination ,
With my style ,
With my innovation ,
With my works ,
With my words ,
With my mind,
Respecting my culture!

And touching the world with my muse ,
Art and culture!
The music of life,
With the way of nature,
Resting on mankind,
In every land ,
My imagination!
My Nation ,
The place of my birth,
With my works to the world

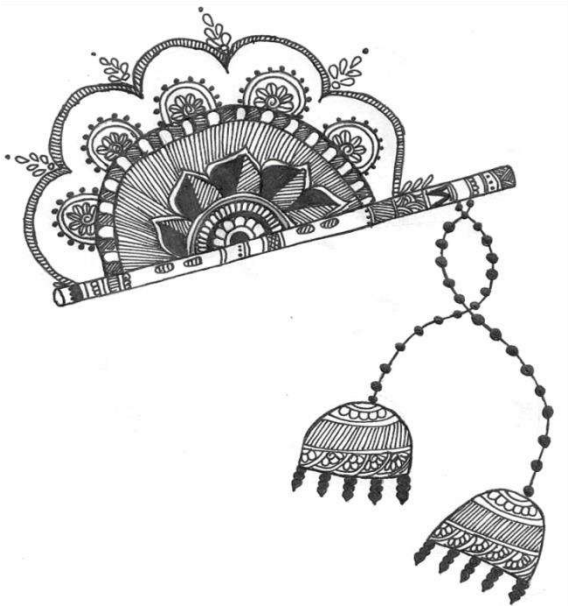

Sadaf Parween, Roll No-12

Name -Swati Singh
Roll no-32
Class -B.Ed. Semester-II
Section-'B'

CREATION

In the deep woods where the sun shines bright,
Among the leaves and streams so light,
There's a love so big,
so pure and so wide,
A love that's old,
always by our side.

The trees tell secrets to the playful wind,
The flowers laugh softly, making us grinned.
The big mountains,
their love never bends,
For nature, they've been friends since time extends.

The river's song is a sweet tune,
To the sea, it runs under the moon.
The moon and the stars in a dance so fine,
Their love story is like a perfect line.

In every morning light, in every evening's view,
Nature draws a picture of love so true.
So let's be kind, let's care for this tie,
For in nature's love, we all happily lie.

Name :- Priyanka Mehta
B.Ed.
Roll:- 136 'D'

HOPE?

Though we have problems, & though we have pains,
Though we have sorrows,
And though we cry,
But still what we have is hope,
Lots of hope,
For things to right very soon,
Very soon.
Though we don't have,
Enough shelter for living,
& though we don't have enough jobs,
Though we don't have,
Enough food to eat,
& though we don't have enough of care,
But still what we have is hope,
Lots of hope,
For these things to be right very soon,
Very soon.
Though we are fighting in the name of religion,
& though what separate us is the series of border,
though we are afraid of terrorism & war,
& though we feel bad when near ones go far,
But what still we have is hope,
Lots of hope,
For things to be right very soon,
Very soon.

Khushbu Kumari
B.Ed. Roll No. 153

WOMEN OF INDIA

In India, women have always enjoyed a place of pride. They've made their mark in nearly every aspect of their lives. A lot is being done for their liberation. An old Sanskrit proverb says that' Gods stay pleased where women are recognized'. Such an important place was given to Indian women in society. In ancient times mothers in a family had control over all the effects. She used to run the house, make opinions regarding the family. If women were given proper education, They can become musicians, artists, and indeed autocrats. The aryan women enjoyed full freedom and equal status with men. They indeed had access to Vedas. No husband could perform a yajna without his woman taking part in it. In those days women had an honourable place in society.

Ironically it's in the ultramodern age that women are suffering a lot. They've lost the glory of the history. The hegemonic masculine ideology made them suffer a lot. Numerous consider that the proper place for women is in the kitchen. They're treated as inferior to men. They don't have boons that men enjoy. Women workers aren't given stipend as men are given. They aren't encouraged to join professions that bear physical labour. For a long time, it was felt like educating girls is gratuitous. There were child marriages. The position of widows was miserable. Sluggishly the part of women was confined to the kitchen. She was a slave in her own house.

But now Indian women have again come out of obscurity, a large number of girls are being educated. They started fighting for their rights and attained success. They're seeking work in all fields. They are even taking jobs that are simply filled with men. The Indian constitution has granted equal rights to men and women. There's no demarcation between men and women. numerous great women served the country in colorful capacities.

Breaking all the stereotypes.. elderly women getting education

The government is also encouraging the upliftment of women. Women are now enjoying reservation in educational institutions, jobs, and politics. They are doing great in the Social, Economic and Political life of the nation.

Their contribution to the nation's glory is no way inferior to the men.

Nidhi Kiran
B.Ed. 2021-23

Burden of Marks

We are little children
We are so cute ,
Don’t all you think
You are so rude?
By honesty and sincerity
We complete our task ,
But why people force us
To get more marks ?
Students who don’t get good marks
they are also gallant ,
they can do everything
And have lots of talent.
Don’t force your children
for getting good marks
but encourage them all
for doing great tasks

Shruti Kumari
B.Ed. 2021-2023